रविवार, दिनाँक 20-08-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

सजनों जानो कि त्रिलोकीनाथ श्री साजन जी की सदा तीनों लोकों में जय-जयकार होती रही है और होती रहेगी क्योंकि आद्, मध्य और अन्त वही सृष्टि के पालक हैं और हर किसी के हृदय में सुशोभित हैं। यह सत्य हर मानव के लिए जानना आवश्यक है। याद रखो जो इस सत्य से परिचित हो उसको धारण कर लेता है वह स्वयंमेव सजनता का प्रतीक बन जाता है। अतः समझदारी में आ जाओ और श्री साजन क्या है, उसको जानो, पहचानो और सदा उसी में अपने मन को लीन रखते हुए सजन पुरुष कहलाओ। जानो इसी में जीवन की सफलता का राज़ छिपा हुआ है। इस तथ्य के दृष्टिगत अपने सजन बनो और जीवन के लक्ष्य की ओर निर्भयता से आगे बढ़ते हुए परमपद को पाओ और विश्राममय अवस्था में आ जाओ। इसी सन्दर्भ में अब ध्यान से सुनोः-

महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।

रघुनाथ जी दे चरणां दे प्यारे, सारी दुनियां दे हैन सहारे।

सब दे कलेश हटाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।

सुग्रीव विभीषण नू मन्त्र सिखाये, रघुनाथ जी दा जाके दर्श दिखाये।

जीवन मुक्त बनाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।

लक्ष्मण नू जदों मूर्छा आवे, महाबीर जी जा के संजीवनी लियावे।

लक्ष्मण दे प्राण बचाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।

तुलसीदास महाबीर जी दी शरणी आवे, महाबीर जी अपना दर्श दिखावे।

रघुनाथ जी नू तिलक लगाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।

जो भैणां महाबीर जी दी शरणीं आवन, महाबीर जी अपना उपदेश बतावन।

भवसागर पार लगाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।

जो महाबीर जी दा नाम ध्यावे, सोई दासी परम पद पावे।

रघुनाथ जी दे चरण दिखाये, महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।

मैं दासी तुहाडे चरणां दी प्यारी, लाज रख लौ मेरे बलधारी।

दासियां नू आप समझाये, चरणां विच प्रेम बढ़ाये।

महाबीर जी ने तीनों ताप मिटाये।।

सजनों जब सच्चेपातशाह जी ने आत्म-निरीक्षण कर यह अनुभव किया कि संसारियों के संग के कारण हम तीनों तापों यथा आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक से ग्रस्त हो गये हैं तो उन्होंने इन तापों से छुटकारा पाने हेतु अपना मुख संसार की तरफ से घुमाकर अन्तर्ध्यान होने का पुरुषार्थ दिखाया। इस हेतु उन्होंने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के प्रति अपने हृदय में इतनी उमंग व निर्मल-उज्जवल प्रेम बढ़ाया कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी उन पर प्रसन्न हो उनके संग हो लिए। इस तरह उनके संग होने से उनकी सुरत को आत्मज्ञान प्राप्त होता गया और वह ज्ञानमय अवस्था में आकर तीनों तापों से मुक्त हो गये यानि उनका मन संकल्प-रहित हो गया। इस तरह उन्हें अपने मन में शोभित परमात्मा का साक्षात्कार हो गया। इस साक्षात्कार के उपरान्त सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने आगे बढ़ने हेतु नाम-ध्यान के रूप में जो युक्ति प्रदान की उसके वर्त-वर्ताव द्वारा वह परमपद के अधिकारी हो गये। इस तरह परमपद प्राप्ति के उपरान्त उनकी सुरत का शब्द संग मिलाप हो गया यानि वह एक रूप हो गये और उन्हें यथार्थ की पहचान हो गई। इस बात को दृष्टिगत रखते हुए सजनों हमें समझना है कि अगर हम भी अपने आप को तीनों तापों से ग्रस्त मानते हैं तो हमें अपनी इस कमज़ोरी का बखान निर्भय होकर निषंगता से सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के समक्ष करना होगा और संसार की तरफ से अपना मुख घुमाकर अन्तर्ध्यान होना होगा। जानो अन्तर्ध्यान होने पर ही आत्मज्ञान प्राप्त कर सकते हो। यहाँ सजनों आत्मज्ञान और नाम-ध्यान प्राप्ति की महत्ता समझ आती है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आत्म-निरीक्षण करो कि नाम-ध्यान की जो युक्ति सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने हमें बक्षी है, क्या हम उस युक्ति का पालन करते हुए नियम से इस औषधि की तीन खुराकों का रोज सेवन करते हैं? हाँ या न?

'मौन'।

सजनों अगर आप ऐसा नहीं करते तो समझो कि आप अपनी कमज़ोरी के कारण अपनी बीमारी आप बढ़ा रहे हो और इसी कारण आपका मन-मस्तिष्क हर घड़ी परेशान रहता है। जब मन-मस्तिष्क की ऐसी दशा होती है तो यह माना जाता है कि अमुक इन्सान की बुद्धि ने उसे धोखा दे दिया है और इसी कारण यह अक्लहीन नादान इन्सान बन गया है। अब यह तो आप जानते ही हो कि अक्लहीन अपने साथ-साथ अपने घर-परिवार वालों का व समाज का नुक्सान कर बैठता है। इसी कारण उसे हर तरफ से धिक्कार प्राप्त होती है। सजनों आज आपकी भी यही हालत है। अगर आप इस रोने-झुखने के नकारात्मक वातावरण से छुटकारा पाना चाहते हो तो अपने पर खुद कृपा करो और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी द्वारा प्रदत्त नाम-ध्यान की युक्ति को विधिवत् अमल में लाओ। इसी के साथ-साथ सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में वर्णित शब्द ब्रह्म विचारों को व्यवहार में यथा उतार लो। जानो ऐसा करने से ही ज्ञानरूप से मज़बूत हो अक्लवान बन जाओगे। अक्लवान हो गये तो फिर कोई आपको भरमाकर अपने पीछे नहीं चला सकेगा। इस तरह स्वतन्त्र रूप से जीवन जीने के काबिल हो जाओगे। जानो यह अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने हेतु अपना तन-मन-धन सब वार दो और इस तरह अपने सजन आप बन जाओ। आपकी अपनी मर्जी है जो चाहो सो करो यानि जो अन्दर स्वभावों में कलुकाल घुसा पड़ा है और जिसके कारण अनीतियों पर चल रहे हो व कलुषित वातावरण का निर्माण कर रहे हो, वैसा ही करते रहो। अब अपनी कहानी सुनो कि हक़ीकत में आप कैसे सजन होः-

(सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के मुख के शब्द)

देखो कलुकाल दी एहो है निशानी, देखो कलुकाल दी एहो है निशानी।

कलुकाल विच अन्ने बहुतेरे, कोई विरले हैन सुजाखे।।

अन्दर दीवा जगदा होवे, अन्नियां नूं कुझ न जापे।

कलुकाल बाहर मन्दिर जावन बहुतेरे, कोई विरला अन्दर देखे।।

वस्तु होवे घर विच प्यारे, जीव राहवे विच भुलेखे।

कलुकाल नाम भुल गये बहुतेरे, कोई विरले अन्दर ध्यान लगावन।।

रोशनी अन्दर आप दी, बाहर जंगलां नूं ढूंडन जावन।

कलुकाल विच सुत्ते बहुतेरे, कोई विरला अन्दर जागे।।

दर्शन पावन रघुनाथ जी दा, कई डेधे रहन अभागे।

कलुकाल विरक्त त्यागी बहुतेरे, कई विरले अन्दर त्यागी होवन।।

बिन सूरजों प्रकाश मन मन्दिर, ओ जन्म अपना खोवन।

महाबीर पूरन मिल पवन, निष्काम रस्ता ओ दिखावन।।

दर्शन पावन रघुनाथ जी दा, जन्म सफ़ल बनावन।

देखो महाबीर जी दी एहो है मेहरबानी, देखो महाबीर जी दी एहो है मेहरबानी।।

मेहरबानी मेहरबानी देखो महाबीर जी दी एहो है मेहरबानी।

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी धन्य हैं क्योंकि उनकी मेहर समरूप कुल संसार पर बरस रही है। विडम्बना की बात तो यह है कि उस मेहर को प्राप्त कर कोई विरला ही अपने जन्म को सँवारने के प्रति जागरूक हो रहा है। इसीलिए तो सच्चेपातशाह जी, जिन सजनों के मन में अन्धकार छा गया है उनके बारे में बताते हुए कहते हैं कि सजनों जानो आदि, अनादि, प्रमादि सत्य हर क्षण हमारे हृदय में प्रकाशित रहता है यानि सत्य का कभी लोप नहीं होता। परन्तु जब हम आत्मिकज्ञान प्राप्त करने में कमज़ोर पड़ जाते हैं और संसार में प्रचलित मन-गढ़ंत ज्ञान धारण कर कुदरत के वास्तविक सत्य को भूल जाते हैं तो हमारी दुर्दशा हो जाती है क्योंकि हमारी अन्तर्दृष्टि बन्द हो जाती है और हम बहिर्मुखी होकर, जो अविचारी, अज्ञानी इन्सान कर रहे हैं, उन्हें देखकर वैसा करना आरम्भ कर देते हैं। इस तरह हम फुरनो से अपने मन को भर कामयुक्त हो जाते हैं जो कि सरासर गलत होता है। इसके विपरीत जिसके हृदय में सत्य प्रकाशित होता है, वहाँ निष्कामता भरपूर होती है। इस बात को समझते हुए सजनों आत्म-निरीक्षण करो कि आप अन्धों की गिनती में या फिर सुजाखों की गिनती में आते हो? इसी सन्दर्भ में विचारो कि बाह्य ज्ञानदृष्टि के आगे जब कुछ आ जाता है तो आप कैसे तड़फते हो और डॉक्टरों के पास भागते हो पर जब अन्तर्दृष्टि के आगे अज्ञान का बादल छा जाता है और वह बन्द हो जाती है व ब्रह्मप्रकाश

होते हुए भी उसे देखने में असमर्थ हो जाती है तो हम क्यों फिक्रमन्द नहीं होते कि यह हमारे साथ क्या हो गया? क्यों नहीं सब वैद्यों के वैद्य सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में आकर अपना ईलाज कराते और अन्तर्ध्यान होकर प्रकाशित सत्य को जानने का यत्न करते? याद रखो यह लाभ आप आत्मज्ञान प्राप्ति उपरान्त ही कर सकते हो। आशय यह है कि जिसके पास आत्मज्ञान होता है उसकी अन्तर्दृष्टि के आगे से अज्ञान का पर्दा छँट जाता है और ज्ञानमय अवस्था आ जाती है। इस तरह वह इन्सान हृदय प्रकाशित सत्य यानि ब्रह्मस्वरूप का दर्शन करने में समर्थ हो जाता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों आत्मज्ञान प्राप्त कर अपना ईलाज आप करो। याद रखो अपना ईलाज आप करने की पूरी युक्ति सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में दी हुई है। इस युक्ति अनुसार अन्तर्ध्यान होकर आत्म-स्वरूप का दर्शन कर लो। यहाँ ज्ञात हो कि आपका मन-मन्दिर सदा से प्रकाशित है और प्रकाशित ही रहता है। हम अज्ञानी ही अपनी-अपनी सोच बनाकर या कामनायुक्त होकर भिन्न-भिन्न स्वभाव अपनाकर सत्य का दर्शन करने में असमर्थ हो जाते हैं और आत्म-विस्मृत इन्सान कहलाते हैं। कहाँ तो आत्म-स्मृति में रहना था और कहाँ हम इस कदर आत्म-विस्मृत हो जाते हैं कि हम भूल जाते हैं कि मैं कौन हूँ, कहाँ हूँ और क्यों हूँ। हम से बड़ा मूर्ख भला और कौन हो सकता है? तो फिर हम संसार समुद्र से पार कैसे उतर सकते हैं? हमारी नैय्या तो फिर मंझधार में डूबेगी ही डूबेगी। यह सब पता होते हुए भी यदि हम न सम्भले तो नैय्या डूबने के उपरान्त तो मौत का परवाना होना ही पड़ेगा और हमारा जन्म बर्बाद होगा ही होगा। इस हेतु सजनों हमें आज़ाद होकर इस जगत में निष्काम भाव से विचरना है। याद रखो जो निष्काम भाव से मन-वचन-कर्म द्वारा कार्य व्यवहार करता है, वह जीवन के विचारयुक्त सवलड़े रास्ते पर चलते हुए जगत से आज़ाद बना रहता है। अतः सजनों मानो किः-

विचार ते अविचार दो शब्द हैन।

विचार सबनां बातां वल्लों जित और फतह है।

अविचार है हार अविचार है हार।।

सजनों आप भी विपरीत आचार-व्यवहार दर्शा कर हार रहे हो और अपयश को प्राप्त हो रहे हो। हम पूछते हैं कि इतना सुनने के पश्चात भी क्या आपको चोट नहीं लगती? क्या आप पत्थर की मूर्ति बन गये हो? अपनी असलियत को भूलकर क्यों धक्के खा रहे हो? इसीलिए आधि-व्याधि के सारे रोग आपके तन-मन को सता रहे हैं और आपका शरीर इतना

रुग्ण हुआ पड़ा है कि वो कुछ भी समझ नहीं पा रहा यानि उस पर किसी बात का कोई असर ही नहीं हो रहा। ऐसे में क्या होगा? - एक दिन आपको अपने ही हाल पर छोड़ दिया जाएगा। हम देखते हैं कि सत्संग में अधिकतर सजनों की यही हालत है। ऐसा इसलिए क्योंकि सत्य को धारण करने में जितना समय लगाना चाहिए, वह उतना समय नहीं लगाते। ऐसे में परमार्थ की बात को आगे कैसे पहुँचाएँगे? हम हैरान होते हैं यह देखकर कि सालों बीत गये परन्तु आत्मज्ञान प्राप्ति हेतु निष्काम भाव से काम करने की जैसी वृत्ति इनके अन्दर पैदा होनी चाहिए थी, वह इनके अन्दर अब तक पैदा नहीं हुई। अब जो निष्कामी नहीं वह ब्रह्मज्ञानी नहीं हो सकता। ऐसा व्यक्ति कदापि, कदापि अपने व जगत के सत्य को नहीं जान सकता। आप ही बताओ कि वह कैसे जानेगा कि अमुक व्यक्ति कैसा है? उन्हीं असत्य प्रिय लोगों के साथ दोस्ती लगाकर आप अपने अन्दर का और घर-परिवार का नकारात्मक वातावरण बना बैठोगे। हम पूछते हैं कि कैसे फिर सत्य को परखकर सत्य ज्ञान प्राप्त करोगे? हमारा कर्त्तव्य है आप सबको जागृति में लाना व समझाना। अब आगे तो कुदरत ने हर मानव को अपना जीवन खुद सम्भालने के लिए स्वतन्त्र छोड़ा हुआ है। आपकी भी मर्जी है अपने जीवन को खुद सँवारो या बिगाड़ो। यहाँ याद रखना कि अपना जीवन बिगाड़ना अपने बच्चों का भी जीवन बिगाड़ने की ओर कदम बढ़ाने की बात होती है। ऐसे में जो उनके प्रति आप प्यार दिखाते हो उसे झूठा व मतलबी ही समझना। ऐसा न हो इस हेतु सजनों मानो कि आपको स्वयं में स्वाभाविक परिवर्तन लाना पड़ेगा। इसके लिए अभी से अपनी जाँचना करनी आरम्भ कर दो और इस सत्य को स्वीकारो कि सत्य सदा हर एक के हृदय में प्रकाशित रहता है। जब तक ख़्याल ध्यान वल व ध्यान उस प्रकाश वल जुड़ा रहता है, तब तक इन्सान सत्य के तेज से हृदय विदित उस कुदरती ज्ञान को पढ़-समझ पाता है। अब जाँचना करो कि क्या अभी तक ऐसा करने में समर्थ हो पाए हो? यदि आपका उत्तर न में है तो आप अपने आप को गुणी कैसे मान सकते हो। जानो यह गुण नहीं अपितु अवगुण है। अपने इन अवगुणों को जब तक नहीं स्वीकारोगे तब तक आत्म-सुधार नहीं कर पाओगे। सच्चेपातशाह जी ने भी यही किया। तभी तो उन्होंने कहा, **'मैं दासी औगुणहारी, लाज रखो न्यायकारी'।**

सो सजनों आप भी दुष्प्रवृत्तियों से उबरो और अपना भविष्य उज्जवल बनाने की ओर आगे बढो। इस बात पर सब विचार कर लेना और अपने घर-परिवार के सदस्यों को आत्मपद प्राप्त करने के योग्य बना लेना। अब सब बोलोः-

(महाबीर जी के मुख के शब्द, श्री साजन जी को कह रहे हैं)

रघुवर जी नाल करलौ प्यार प्यार, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।

कुछ बात चीत ओन्हां करनी ऐं, कलुकाल दी पीड़ा हरनी ऐं।।

अंग संग राहवन ओ नाल ओ नाल, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

ओ बात ऐसी सुनावनगे, जगत विच रोशनी लियावनगे।

हनेरा ओ देसन मिटा मिटा, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

रोशनी ओही प्रकाश वी ओही, हर वस्तु विच निवास वी ओही।

ओ होसन दीनदयाल दयाल, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

धर्म दा झण्डा झुलांवनगे, सुकर्मां दा राज लियावनगे।

ठण्डी आवे हवा हवा, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

रघुनाथ जी लीला ऐसी वर्तावनगे, विसूचिका दी सूचका दिखावनगे।

कलयुग दा बखेड़ा देसन मिटा मिटा, रघुवर जी रहे ने बुला आपनूं।।

अब बताओ कि मानव धर्म क्या है?

'मौन'

सजनों जब इतना ही नहीं जानते तो धर्मज्ञ कैसे बनोगे? जानो निष्कामता ही मानव का धर्म है। इस सन्दर्भ में आत्म-निरीक्षण करो कि आप मन-वचन-कर्म से जो भी करते हो, क्या वह निष्काम भाव से करते हो? अगर इसका उत्तर 'हाँ' में मिले तो समझ लेना कि आप धर्मज्ञ हो अन्यथा समझ लेना कि आप अधर्म युक्त रास्ते पर चल रहे हो। हम पूछते हैं कि क्यों आपको अधर्मयुक्त रास्ते से प्यार है? याद रखो अधर्म के पीछे कामना होती है जबकि धर्म कामना से मुक्त होता है। कामना से मुक्त होना क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से छुटकारा पाना है। विकारों से मुक्ति हो गई तो मन शान्त हो अपनी यथार्थ अवस्था में आ जाता है। ऐसा होने पर मन मन्दिर में शोभित परमात्मा दृष्टिगत रहता है और इन्सान को अपने आप की पहचान हो जाती है। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि मूर्ख मत बनो अपितु अपने

सजन बनो। इस हेतु सबके प्रति जो आपका कर्त्तव्य है उस कर्त्तव्य की पालना करने वाले कर्त्तव्यपरायण इन्सान बनो। आशय यह है कि गृहस्थाश्रम के कर्त्तव्य, समाज के प्रति कर्त्तव्य व अपने प्रति कर्त्तव्य परमार्थी ज्ञान अनुसार निभाओ व अपारदर्शी नाम कहाओ।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।